61वां राष्ट्रीय अणुव्रत अधिवेशन

संयम है समस्याओं का समाधान : आचार्य महाश्रमण

महावीर की अहिंसा को अपनाया गांधी ने : सीएम

सरदारशहर 10 अक्टूबर, 2010

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में चल रहे 61वें राष्ट्रीय अधिवेशन में सज़्पूर्ण देश से भाग लेने पहुंचे अणुव्रती कार्यकर्ताओं को संबोधित करने राजस्थान के मुज़्यमंत्री अशोक गहलोत तेरापंथ भवन पहुंचे। उन्होंने इस मौके पर न केवल अणुव्रत आन्दोलन से जुड़े देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्ण प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू सहित राजस्थान के राज्यपाल शिवराज पाटिल के विचारों से सहमति जताई बल्कि भाईचारे के लिए अणुव्रत को परम आवश्यक बताया। मुज़्य अतिथि के तौर पर मुज़्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि यह भूमि भगवान महावीर की है। भगवान महावीर की अहिंसा, अपरिग्रह के सिद्धान्त को ही महात्मा गांधी ने अपनाया और उसको आंदोलन में इस्तेमाल किया। भगवान महावीर और महात्मा गांधी की इस धरती पर नक्सलवाद, जातिवाद, सज़्प्रदायवाद के रूप में हिंसक वारदातें हो रही है, जो चिंतनीय है। हिंसा की समस्या का समाधान अणुव्रत आन्दोलन जैसे महान प्रयास ही दे सकते हैं। मुझे इस बात की खुशी है कि इस आन्दोलन से दो लाख से ज़्यादा शिक्षक जुड़े हुए हैं। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने जो इस आन्दोलन को शक्ति दी वह अपने आप में अविस्मरणीय है। आचार्य महाश्रमण के समुख अणुव्रती कार्यकर्ता ही नहीं सज़्पूर्ण विश्व आशा भरी नजरों से देख रहा है। मुझे आशा है उनके नेतृत्व में यह आन्दोलन नई ऊर्जा प्राप्त करेगा और विश्व शांति में महत्वपूर्ण कार्य करेगा।

मुज़्यमंत्री गहलोत ने कहा कि तेरापंथ एक अनुशाषित धर्मसंघ है। पूरे देश में चर्चित है, जो अनुशासित होता है, वही दूसरों पर अनुशासन कर सकता है। उन्होंने सत्य ही ईश्वर है पर विशद विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए कहा कि जहां सत्य है वही अहिंसा है और जहां अहिंसा है वहीं सत्य है। मुज़्यमंत्री ने बढ़ती मूल्यों में गिरावट पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने गोधरा काण्ड के बाद गांधी की भूमि से अहिंसा का जो संदेश दिया वह मूल्यों की गिरावट रोकेगा और अहिंसा की आवाज को बुलंद करेगा।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि सत्य भगवान ओर लोक का सारभूत तत्त्व है। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन के मुज़्य घोष संयमः खलु जीवनम् का उल्लेख करते हुए कहा कि संयम ही जीवन है। संयम के द्वारा ही विश्व की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। जो इन्द्रिय, मन, वाणी का संयम करता है, वह समस्या समाधान

में सहायक बनता है, उन्होंने आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा संयम और अहिंसा के संदेश को फैलाने के लिए की गई सज़्पूर्ण देश में पद यात्राओं का उल्लेख करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के प्रयास से गौधरा काण्ड के बाद अहमदाबाद की ऐतिहासिक रथ यात्रा शांति के साथ निकली। उस समय हिन्दु-मुस्लिम समुदाय एवं प्रशासन वर्ग को एक साथ बिठाकर वे समझाते थे। तब ऐसा लगता मानों एक पिता अपने पुत्रों को समझा रहा है। उन्होंने कहा कि अनुकंपा की चेतना जागृत हो जाये तो अपराध पर नियंत्रण अपने आप हो जायेगा। अनुकंपा हर क्षेत्र में और प्रत्येक वर्ग के लोगों में जागनी चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने राजनीति को बुरा मानने वालों को नशीहत देते हुए कहा कि राजनीति अस्पृष्य नहीं है, राजनीति आवश्यक है, पर इस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए कि राजनीति में जाने वाले लोग नैतिक मूल्यों को नजरअन्दाज न करें। मूल्यों के प्रति निष्ठा रखने वाला राजनीति का दुरुपयोग नहीं करता है। उन्होंने राजस्थान में शांति बने रहने का आशीर्वाद देते हुए मुज़्यमंत्री से कहा कि राजस्थान अपराध मुक्त बने इस ओर ध्यान देना आपका कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि व्यापारी वस्तु का वितरण कर सेवा करता है। उसके सामने सेवा करना प्रथम लक्ष्य और पैसा दूसरा लक्ष्य होना चाहिए। अधिकारियों के सामने भी व्यवस्था बनाकर जनता की सेवा प्रथम लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने मनी, सैक्स और पॉवर को अपराध कराने का जिज़्मेदार बताया।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि अणुव्रत सज़्प्रदाय विहिन धर्म है। कथनी-करनी की समानता, मानवीय एकता, ज्ञान आचार की समन्विति अणुव्रत है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष तेजकरण सुराणा ने कहा कि दसवें साल के दसवें महीने की दस तारीख को मुज़्यमंत्री यहां आए हैं। आज ज्योतिष गणना के अनुसार राजयोग भी है। आचार्य महाश्रमण के रूप में महान अणुव्रत अनुशास्ता का सान्निध्य प्राप्त है। ऐसे समय में अणुव्रत आन्दोलन द्वारा प्रेषित संयम का संदेश सज़्पूर्ण विश्व में व्याप्त होगा ऐसा विश्वास है।

अधिवेशन में मुज़्यमंत्री गहलोत ने छगनलाल शास्त्री एवं मोहनभाई जैन को अणुव्रत अलंकरण सज़्मान के रूप में प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। अणुव्रत महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल एम. रांका एवं स्थानीय अध्यक्ष रावतमल सैनी ने साहित्य के द्वारा मुज़्यमंत्री का सज़्मान किया। आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से मुज़्यमंत्री का साहित्य के द्वारा सज़्मान किया। अब्दुल जफार के द्वारा प्रस्तुत अणुव्रत गीत से प्रारंभ हुए इस कार्यक्रम में रावतमल सैनी ने स्वागत भाषण दिया। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने अणुव्रत सभागार के लोकार्पण पर पधारे अतिथियों का स्वागत किया। अमरिकन गांधी के रूप में विश्वयात्रा कर अहिंसा का संदेश फैलाने वाले एक विदेशी ने अपने विचार रखे। महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत विश्व भारती के महामंत्री संचय जैन ने किया।

अणुव्रत सभागार का हुआ लोकार्पण

मुज़्यमंत्री अशोक गहलोत ने श्रीमती रतनीदेवी गोठी धर्मपत्नी स्व. तोलाराम गोठी द्वारा नवनिर्मित अणुव्रत सभागार का लोकार्पण किया। लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी ने की। मुज़्यमंत्री ने जैसे ही सभागार का फीता काटकर लोकार्पण किया तो उपस्थित लोगों ने 'ओम अर्हम' की ध्वनि से हर्ष प्रकट किया। इस मौके पर देशभर से पहुंचे अणुव्रती कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत सभागार से अणुव्रत आन्दोलन को नई ऊर्जा मिलने की आशा व्यक्त की।

सरदारशहर प्रोफेशनल्स की संगोष्ठी आयोजित

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में सरदारशहर के तेरापंथी प्रोफेशनल्स की संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी के शुभारंभ अवसर पर आचार्य महाश्रमण ने कहा कि प्रोफेशनल्स अणुव्रत को गति देने में अपना पुरुषार्थ नियोजित करें और स्वयं अणुव्रती बनने के साथ दूसरों को भी अणुव्रती बनने की प्रेरणा दें।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि समाज की युवाशक्ति सबसे बड़ी शक्ति है। प्रोफेशनल्स युवाओं की शक्तियुक्त है। सभी समय खोये बिना समाज के विकास एवं धर्मसंघ को नई दिशा देने का लक्ष्य बनाएं।

स्थानीय विधायक अशोक पींचा ने कहा कि सरदारशहर का सज़्पूर्ण विकास तभी संभव है जब आप सबका सार्थक प्रयास हमारे साथ होगा उन्होंने कहा कि हम जन्मभूमि के लिए कुछ कर ही हम उसको ऋण को चुका पायेंगे। मुनि रजनीश कुमार ने कहा कि जिसके पास बुद्धि है संकल्प है और शक्ति है वह किसी भी कार्य को आगे बढ़ा सकता है।

इस मौके पर डॉ. दिनेश दुगड़ ने स्वागत भाषण दिया। डॉ. कान्ति श्यामसुखा, तेरापंथ प्रोफेशनल्स फॉर्म के राष्ट्रीय अध्यक्ष नरेन्द्र श्यामसुखा, व्यवस्था समिति के महामंत्री रतनदुगड़ ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन युवराज पींचा ने किया। कार्यक्रम का संचालन युवराज पींचा ने किया।

– शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)